ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBBIL04292
RNI REG. NO. UPBBIL/2014/66218 PP. NO.- 65-66
ISSN NO.-2347-2944
Vol-12, Issues-XII YEAR 2018 Extra

वर्तमान समय में व्यक्तित्व विकास के प्रति लोगों का बदलता दृष्टिकोण

स्नेहलता सिंह

शोध अध्येत्री, गृह विज्ञान विभाग, भगवंत विश्वविद्यालय, अजमेर (राजस्थान) भारत

Received- 30.08. 2018, Revised- 06.09.2018, Accepted - 11.09.2018 E-mail: rksharpur2@gmail.com

सारांश : *'विगत समय तथा समाज जहाँ पर वैयक्तिकता को रचमात की प्रधानता दी गई है, सामान्यत : व्यक्तित्व से सम्बन्धित है। नवीन मानवीय अभिरूचियों एवं लोकतान्त्रिक सरकार की मानव तथा समाज में उसकी भूमिका के प्रति रूचियाँ बढ़ रही है। वर्तमान जीवन धारा में प्राणी को समाजशास्त्रीयों, व्यवहारवादियों एवं मनोवैज्ञानिकों के ध्यान का केन्द्र बिन्दु वयक्तिकता बना दिया है। वैयक्तिकता की इस व्याख्या ने व्यक्तित्व के स्पष्ट स्वरूप के ज्ञान के परिभाषा करना अत्यन्त ही कठिन है, क्योंकि इस सम्प्रत्यय का अवैज्ञानिक स्थिति में अत्यन्त ही विस्तृत रूप से प्रयोग हुआ और इसकी व्याख्या भूत एवं वर्तमान की विचार धाराओं की एवं पूर्वग्रह के परिप्रेक्ष्य में की जा रही है, चूँकि एक पर्याप्त संतोष पद परिभाषा प्राप्त करने के लिए वैज्ञानिक प्रदत्तों की मात्रा अप्रर्याप्त है, इसलिए व्याक्तित्व के कुछ शोध व्यक्तित्व का '' प्रारम्भिक अध्ययन पर्यावरण के परिप्रेक्ष्य में करते है, वह कुछ ने अपने प्रयासों का व्यक्तित्व का जैविक आधार निर्धाण करने पर केन्द्रीत कर रखा है। कुछ ने इन कारकों को समायोजित रूप में वर्णित किया है, परन्तु कुछ लोगों ने आवधारणा को स्वीकार किया कि मानव ने व्यक्तित्व का अध्ययन सम्पूर्ण जीवन प्रक्रिया को समाहित करके चलता है । इस विचार के द्वारा व्यक्तित्व का अध्ययन व्यापक सार्वभौमिक उपागम के अन्तर्गत होता है ।*

कुंजी शब्द – वैयक्तिकता, अभिरूचि, लोकतांत्रिक, परिप्रेक्ष्य, सार्वभौगिक, उपागम, पर्यावरण, जैविक आधार।

व्यक्तित्व के उपर्युक्त परिभाषा में विचार बिन्दु को परिभाषित करना है कि सामाजिक नियमों एवं प्रतिकात्मक सांस्तिक के जाल में बँधा हुआ एक मानवीय प्राणी है जो उसके प्रत्येक कार्य को प्रभावित करते है । इस विषय में कुछ विद्वान इस तत्व को अस्वीकार करते है कि व्यक्तित्व का अध्ययन मानवीय अभिव्यक्ति की अपेक्षा एकी.त प्रक्रिया के रूप में होने चाहिए । इस प्रकार व्यक्तित्व की परिभाषा एक अनुभवकर्ता, विचारकर्ता व कार्यकर्ता व्यक्तित्व के रूप में की जा सकती है, जो प्रायः वातावरण के व्यक्तियों व वस्तुओं के स्वयं को पृथक समझता है । मानव प्राणी व्यक्तित्व नही रखता अपितु स्वयं ही एक व्यक्तित्व होता है

व्यक्ति के व्यक्तित्व का अध्ययन उसके परिवार रूचियों अभिवृत्तियों तथा व्यक्तिगत सम्बद्धताओं के साथ सम्बन्धित है । व्यक्तित्व के समस्या समाज के हर पहलुओं को स्वयं में समाहित करके चलती है । व्यक्तित्व के हर पहलु की जो एकांकी रूप में अर्थहीन होता है । उक्त पहलुओं के साथ सकारात्मक सम्बद्धता हैं ।

शोध के उद्देश्य – शोध के उद्देश्य निम्नानुसार है

1. व्यक्तित्व के सन्दर्भ में वेश – भूषा का अध्ययन करना ।
2. छात्रवासीय एवं गैर छात्रावासीय विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का अध्ययन करना ।
3. छात्र एवं छात्राओं के आचरण का एक समूचित अध्ययन करना ।
4. वर्तमान समय व्यक्तित्व उसका व्यवहारिक परि.श्य अध्ययन करना ।

परिकल्पना – प्रस्तुत शोध के लिए परिकल्पनाएँ निम्नलिखित हैं–

1. छात्र ६ छात्राओं के वेश–भूषा में अन्तर पाया जाएगा ।
2. छात्र ६ छात्राओं के व्यक्तित्व में सार्थक अन्तर नहीं पाया जायेगा ।
3. 18 वर्ष से ऊपर के छात्र ६ छात्राओं के लिंगानुसार व्यक्तित्व में सार्थक अन्तर पाया जायेगा ।
4. वर्तमान समय में बालक व बालिकाओं के बदलते स्वरूप में व्यक्तित्व व्यवहारिक परि.श्य में सार्थक अन्तर पाया जाएगा।

परिसीमन – इस अध्ययन को गोरखपुर जिले के ग्रामीण व शहरी बालक – बालिकाओं तथा सहशिक्षा शासकीयध्अशासकीय अनुदान प्राप्त इण्टर कालेज में अध्ययन कक्ष 11.10.09 के छात्र – छात्राओं को परिसीमित किया गया है ।

शोध विधि – शोध हेतु सर्वेक्षण विधि द्वारा प्रस्तुत का प्रयोग किया गया ।

न्यादर्श – प्रस्तुत शोध हेतु गोरखपुर जिले के उच्चतर माध्यमिक शालाओं में ग्रामीण व शहरी 50 बालक 50 बालिकाओं को उद्देश्यपूर्ण न्यायदर्शन विधि में प्रयोग किया जायेगा ।

उपकरण – 1. बालक – बालिकाओं में वर्तमान समय में व्यक्तित्व विकास के प्रति अभिवृत्ति मापन हेतु प्रयोग किये गये, उपकरण में कुल 100 प्रश्न हैं, जिस पर

अनुरूपी लेखक

ISSN NO.-2347-2944
Vol-12, Issues-XII YEAR 2018 Extra

अपना मत दो बिन्दुओं (हाँध्नही) पर देना है ।

2. व्यक्तिगत मापन के लै पदह द्वारा निर्मित .....विद्यार्थियों के लिए प्रयोग किया है ।

चर – प्रस्तुत शोध में दो चरों का प्रयोग किया गया है।

1. स्वतंत्र चर – बालकों में वर्तमान समय में व्यक्तित्व विकास के प्रति बदलते .ष्टिकोण की आवृत्ति अभिवृत्ति।

2. परतंत्र चर – व्यक्तिगत गुण ।

सांख्यिकीय विश्लेषण – प्रस्तुत शोध में सांख्यिकीय विश्लेषण हेतु मध्यमान मानक विचलन, मध यमान के अन्तर की सार्थकता की गणना की गयी ।

सामान्य बच्चों में एकान्त प्रिय का अध्ययन परिणाम –

	आवृतियाँ प्रतिशत	न्याय प्रतिशत	संचयी	आवृत्तियाँ
एकान्त प्रिय	36	36.0	36.0	36.0
बर्हिमुखी	64	64.0	64.0	100.0
योग	100	100.0	100.0	100.0

उपरोक्त तालिका से सामान्य बच्चों का एकान्त संबंधी परिणामों से स्पस्ट है कि 64 प्रतिशत बच्चें बर्हिमुखी है और 36 प्रतिशत बच्चें एकान्त प्रिय है । अतः निष्कर्षतः कहा जा सकता है सामान्य बच्चों का एकग्र प्रिय बर्हिमुखी का औसत प्रभाव पड़ता है ।

सामान्य बालक – बालिकाओं में दिवा स्वपन व काल्पनिक आदतों का अध्ययन –

	आवृतियाँ	प्रतिशत	न्याय प्रतिशत	संचयी आवृत्तियाँ
बालक	12	12.0	12.0	12.0
बालिका	34	34.0	34.0	34.0
दिवा स्वपन व कल्पना	54	54.0	54.0	100
योग	100	100	100.0	

उपरोक्त तालिका से सामान्य बालक 12 प्रतिशतबालिकाओं में 34 प्रतिशत में दिवा स्वपन व कल्पना संसार 54 प्रतिशत आदतें हैं । अतः निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि सामान्य बालक – बालिका में दिवा स्वपन व कल्पना का सामान्य औसत प्रभाव पड़ता है ।

बालक – बालिकाओं में मीडिया से प्रभावित व्यक्तित्व का तुलनात्मक अध्ययन –

	आवृतियाँ	प्रतिशत	न्याय प्रतिशत	संचयी आवृत्तियाँ
बालक-बालिका	7	7.0	7.0	7.0
मीडिया	70	70.0	70.0	70.0
व्यक्तित्व	23	23.0	23.0	100.0
योग	100	100	100	100

उपरोक्त तालिका में बालक बालिका में 7 प्रतिशत मीडिया से, 70 प्रतिशत तथा व्यक्तित्व 23 प्रभावित दिखा है। अतः निष्कर्ष में कहा जा सकता है मिडिया का व्यक्तित्व विकास पर आदतों का औसत प्रभाव पड़ता है

निष्कर्ष – प्रस्तुत शोध के संकलित आकड़ों से जो निष्कर्ष हुए है, वे निम्नलिखित हैं –

1. वर्तमान समय में व्यक्तित्व विकास के प्रति लोगों का बदलता .ष्टिकोण का साकारात्मक .ष्टिकोण है ।

2. वर्तमान समय में मीडिया के द्वारा बदलते .ष्टिकोण में बालक ६ बालिकाओं का साकारात्मक .ष्टिकोण है ।

3. वर्तमान समय में संयुक्त परिवार की विघटन के वजह से विखरता व्यक्तित्व में प्रभाव पड़ा ।

4. समाज में धुम्रपान मद्यपान के वजह से वि.ति व्यक्तित्व में अनेक वि.ति का प्रभाव पड़ा।

सुझाव– 1. दोहरे व्यक्तित्व वाले समाज के कैसे व्यक्तित्व विकास को निखारा जाए, का अध्ययन करना ।

2. भ्रमित वातावरण के बीच कैसे व्यक्तित्व विकास को निखारा जाए ।

3. व्यक्तित्व विकास में सामाजीकरण के लिए कार्यक्रम लागू किया जाए ।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. सिंह, अरूण कुमार (2008) : 'व्यक्तित्व का मनोविग्यान', पटना, मोतीलाल बनारसीदास।

*****